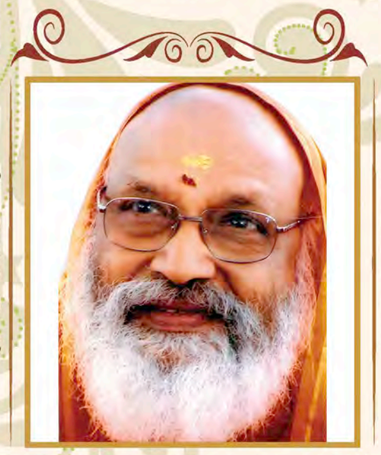


स्वामी दयानन्द सरस्वती (मरणोपरांत)

Swami Dayananda Saraswati (Posthumous)



पद्म भूषण

Padma Bhushan



उनके शिष्य राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

His disciple receiving the decoration from the President

स्वामी दयानन्द सरस्वती (मरणोपरांत)

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदान्त के उत्कृष्ट प्रतिपादक और अप्रतिम आचार्य थे। सम्पूर्ण विश्व में आपको न केवल आचार्य और गहन विचारक के रूप में व्यापक मान्यता मिली है वरन् विभिन्न वर्ग के व्यक्तियों के मध्य व्यापक समझ–विकास में योगदान देने और इस प्रकार वैश्विक शान्ति हेतु योगदान के लिए भी जाना जाता है।

2. आपका जन्म 15 अगस्त, 1930 में मन्जाक्कुडी, तमिलनाडु में हुआ और आपने वर्ष 1962 में संन्यास लिया। आपने अर्ष विद्या पीठम, स्वामी दयानन्द आश्रम, ऋषिकेश, अर्ष विद्या गुरूकुलम, सिलोर्सबर्ग पी.ए., सं.रा. अमेरिका, अर्ष विद्या गुरूकुलम, कोयम्बटूर तथा अर्ष विज्ञान गुरूकुलम, नागपुर नामक तीन आश्रमों/गुरूकुलों की स्थापना की। पूरे विश्व में उपनिषदों के संदेश का प्रचार करने हेतु आपकी यात्राओं से आपके विद्यार्थियों को अनेक देशों में अर्ष विद्या केन्द्र स्थापित करने के लिए प्रेरित हुए। अध्यापन के अलावा, आपने वेदान्त पर भी बहुत सी पुस्तकों की रचना की है।

3. सभी हिन्दू धार्मिक नेताओं के एकीकरण हेतु एक साझा मंच प्रदान करने के लिए आपने 1999 में हिन्दु धर्म आचार्य सभा की स्थापना की। इसकी प्रथम बैठक 2003 में चेन्नई में हुई, जिसमें हिन्दु धर्म से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करने के लिए बहुत से मठों के प्रमुख इकट्ठे हुए। इसके अतिरिक्त, बाद की आचार्य सभा बैठक से यह स्पष्ट हो गया कि वैश्विक समझदारी और शान्ति की दिशा में आपके द्वारा किस प्रकार महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है। आपने वर्ष 2000, में एक धमार्थ संगठन आल इंडिया मूवमेंट फॉर सेवा (ऐम फॉर सेवा) की स्थापना की, जो भारत के ग्रामीण विद्यार्थियों तक मूल्य आधारित शिक्षा पहुंचने पर केन्द्रित था। आज एम फॉर सेवा नामक धमार्थ ट्रस्ट भारत के 16 राज्यों में 104 छात्रावास (विद्यार्थी गृह), 6 विद्यालय और एक कला तथा विज्ञान महाविद्यालय चला रहा है, जिससे 10,000 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

4. एशिया, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका और यूरोप के सभी देशज आस्थाओं के गुरूजनों को एकजुट करने के आपके सतत् प्रयासों से दिल्ली में विश्व धार्मिक विविधता संरक्षण सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, माननीय दलाई लामा और भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमण द्वारा की गई। अनिन्द्य तर्क और विवेक का इस्तेमाल करते हुए आपने स्पष्टतः कहा कि धार्मिक विविधता हिन्दूवाद का एक मजबूत पहलू है। आपने यह भी कहा कि वैश्विक शान्ति स्थापित करने हेतु धार्मिक विविधता की महत्ता को समझना एक अधिक स्थाई समाधान है।

5. आपको धार्मिक आस्थाओं के मध्य व्यापक समझ–विकास हेतु महानतम योगदानों, वेदान्त के दृष्टिकोण के प्रसार हेतु और संस्कृतियों में सद्भाव स्थापित करने के आपके प्रयासों के लिए बहुत से सम्मान प्राप्त हुए हैं। वर्ष 2012 में आपको श्रृंगेरी मठ के अध्यक्ष से आदि शंकराचार्य अवार्ड मिला था। वर्ष 2013 में आपके सम्मान में संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय झंडा संयुक्त राष्ट्र के संसद भवन पर फहराया गया। वर्ष 2015 में आपको अद्वैत आश्रम, कोलाथुर, केरल द्वारा 'वेदान्त रत्न' सम्मान प्रदान किया गया।

6. 23 सितम्बर, 2015 को ऋषिकेश में आपका स्वर्गवास हुआ।

Swami Dayananda Saraswati (Posthumous)

Swami Dayananda Saraswati was a master exponent and unparalleled teacher of Vedanta. He is widely recognized across the world not only as a teacher and profound thinker, but also for his contribution towards greater understanding among diverse peoples and thereby global peace.

2. Born on August 15, 1930 in Manjakkudi, Tamil Nadu, Swami Dayananda took sannyasa in the year 1962. He founded four ashrams/gurukulams- Arsha Vidya Pitham, Swami Dayananda Ashram, Rishikesh; Arsha Vidya Gurukulam, Saylorsburg PA, U.S.A; Arsha Vidya Gurukulam, Coimbatore and Arsha Vijnana Gurukulam, Nagpur. His travels across the world spreading the message of the Upanishads, led him to inspire his students to establish Arsha Vidya Centres in many countries. Besides teaching, he has authored numerous books on Vedanta.

3. Swami Dayananda established the Hindu Dharma Acharya Sabha in 1999 to provide a common platform for all Hindu religious leaders to come together. Its first meeting was held in 2003 in Chennai, wherein heads of many Mathas sat together to discuss the issues facing Hindu Dharma. Moreover, the critical contribution that they could make towards global understanding and peace became clearer with each subsequent Acharya Sabha meeting. He also founded the All India Movement for Seva (AIM for Seva), a charitable organisation in the year 2000, focussed on reaching value based education to the rural students of India. Today AIM for Seva operates 104 hostels (students' home) in 16 states of India, 6 schools and a college of arts and science, benefiting more than 10,000 students.

4. Swami Dayananda's persistent efforts to bring together elders of all indigenous faiths, from Asia, Australia, South America, North America, Africa and Europe, culminated in the Global Conference for the Preservation of Religious Diversity at Delhi. It was presided by the then Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee, the Hon'ble Dalai Lama and the former President of India Shri R. Venkataraman. Using impeccable logic and reason, Swamiji clearly brought out that religious diversity is the strongest point of Hinduism. He also stated that understanding the importance of religious diversity was the more permanent solution to bring about global peace.

5. Swami Dayayanada received many honours for his rich contributions towards greater understanding among religious faiths, for his spread of the vision of Vedanta and for his efforts towards harmony among cultures. In the year 2012, he received the Adi Shankaracharya Award from the head of the Shringeri Matha. In 2013, the national flag of USA was flown over the US capitol in honour of Swamiji. He was awarded the title 'Vedanta Ratna' by the Advaita Ashramam, Kolathur, Kerala in 2015.

6. Swami Dayananda Saraswati passed away on 23rd September, 2015 at Rishikesh.